अध्याय – पंचम

(सारांश, निष्कर्ष एवं भावी शोध हेतु सुझाव)

अध्याय – पंचम
(सारांश एवं सुझाव)

5.1 सारांश –

महाराष्ट्र राज्य के अन्तर्गत SOPT योजना में सुधार करके एक नया कार्यक्रम विकसित किया गया जिसका नाम (SMART -PT Programme) Statewide Massive and Rigorous Training for Primary Teachers Programme रखा गया। इस कार्यक्रम के मुख्यतः दो उद्देश्य हैं –

1) प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों को गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा के लिए क्षमताधिष्ठित पाठ्यक्रम (Competency bassed curriculum) की मूलभूत संकल्पना से परिचित कराना।

2) प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों को क्षमताधिष्ठित पाठ्यपुस्तकों (Competency Bassed Text Books) को बाल केन्द्रीत (Child Centred) और क्रिडन पद्धति (Play Way) से कार्यान्वित करने में सक्षम बनाना।

इस प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण भाग यह था कि इसमें दस शैक्षिक क्षमताओं (Ten Educational Competency) को विस्तारित रूप से अध्यापकों में उन क्षमताओं के उपयोग के बारे में जानकारी देना है।

इस प्रशिक्षण में केन्द्र शासन, महाराष्ट्र प्राथमिक शिक्षण परिषद और युनिसेफ (UNICEF- United Nation Child Emergency) इनके सहयोग से सभी शालाओं के

सभी शिक्षक व मुख्य अध्यापकों के प्रशिक्षण की विकेन्द्रित (Decentrelize) व्यवस्था की गई है।

5.2 प्रस्तुत अध्ययन –

"प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु आयोजित स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन है।"

5.3 उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे :–

1) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में शिक्षकों के विचारों, मतों का अध्ययन करना।

2) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु किन विधियों एवं क्षमताओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसका अध्ययन करना।

3) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्राप्त विधियों एवं क्षमताओं का अध्ययन पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करना।

4) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण में प्राप्त विधियां एवं क्षमताओं को कक्षा में लागू करने में आने वाली कठिनाइयां एवं समस्याओं का अध्ययन करना।

5) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के व्यवहारिकता का अध्ययन करना।

6) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सेवाकालीन शिक्षकों के शिक्षक कौशल पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करना।

7) प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण में प्राप्त विधियों एवं क्षमताओं का कक्षा में उपयोग का अध्ययन करना।

5.4 परिकल्पना –

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया था

1) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

2) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षकों के लिए उपयोगी है।

3) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण में प्राप्त विधियों एवं क्षमताओं को कक्षा में लागू करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

4) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सेवाकालीन शिक्षकों के शिक्षक कौशल पर पर्याप्त प्रभाव पड़ रहा है।

5) प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण में प्राप्त विधियों एवं क्षमताओं का कक्षा में उपयोग किया जाता है।

5.5 अध्ययन विधि एवं उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन एक सर्वेक्षण कार्य था, जिसके अन्तर्गत प्रतिदर्श वर्धा जिले के चार तहसीलों को सम्मिलित किया गया है। इस सर्वे अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया तथा प्रश्नावली भरवाई गयी।

साक्षात्कार तथा प्रश्नावली के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया गया। अवलोकन अनुसूची द्वारा स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्यापकों के कक्षीय अध्यापन पर प्रभाव का अवलोकन किया गया।

5.6 प्रदत्तों का विश्लेषण –

स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित शिक्षकों से प्राप्त प्रदत्तों का सारणीयन कर प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया।

5.7 मुख्य परिणाम –

प्रस्तुत शोध के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित हैं :–

1) वर्धा जिले के स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड, मराठी, अंग्रेजी भाषा, शिक्षण, नई शिक्षा नीति, जनसंख्या प्रशिक्षण, सीखना–सीखाना पैकेज, विज्ञान, गणित किट का प्रयोग एवं दस शैक्षिक क्षमताओं का अध्यापन क्रिया में प्रभावी उपयोग करने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है।

2) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा प्राथमिक शिक्षा से संबंधित सभी सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया।

3) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण द्वारा प्राथमिक शिक्षकों को कक्षा शिक्षण हेतु बाल केन्द्रित शिक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें समूह चर्चा, प्रश्नोत्तर विधि, क्रियाकलाप आधारित खेल विधि, गतिविधि आधारित विधियों का प्रशिक्षण दिया गया।

4) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा प्राथमिक शिक्षकों को भाषा शिक्षण, गणित शिक्षण तथा पर्यावरण अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री के उपयोग द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है।

5) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण के द्वारा प्राथमिक शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री के प्रयोग का प्रशिक्षण मिला जिसके अंतर्गत दृश्य काव्य सामग्री, चार्ट, मुखौटे, मॉडल, मानचित्र खिलौने तथा आसपास के वातावरण को भ्रमण द्वारा बच्चों को अवलोकन व प्रदर्शन द्वारा शिक्षा देना सम्मिलित है।

6) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों को कक्षा शिक्षण हेतु स्थानीय सामग्री के प्रयोगों का प्रशिक्षण दिया गया।

7) इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को बच्चों के मनोविज्ञान से संबंधित प्रशिक्षण मिला जिसके अंतर्गत बच्चों की अवस्थाओं के अनुसार उनको शिक्षा देना उनकी समस्याओं का निदान करना तथा अधिगम में आनेवाली रूकावटों को दूर करना है।

8) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु प्रशिक्षण मिला जिसके अंतर्गत विशेष आवश्यता वाले बच्चों की पहचान, पालकों से मिलकर उनकी समस्याओं को दूर करना तथा क्षमता के अनुरूप कार्य करवाना तथा उसके अनुरूप मूल्यांकन कर उनके मनोबल बढ़ाने का प्रशिक्षण मिला।

9) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को दक्षता आधारित प्रशिक्षण (क्षमताधिष्ठित प्रशिक्षण) मिला। इसमें दस प्रकार की अध्यापन क्षमता को शिक्षक में विकसित करने पर बल दिया गया।

10) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा प्राथमिक शिक्षकों को सतत मूल्यांकन छमाही एवं तिमाही व वार्षिक परीक्षा लेना, प्रत्येक माह टेस्ट लेना, प्रत्येक ईकाई का टेस्ट लेना, मौखिक तथा लिखित परीक्षा का प्रशिक्षण मिला।

11) शिक्षा के सर्वव्यापीकरण हेतु शिक्षा को मनोरंजक बनाना, जनभागीदारी, पालकों से संपर्क सर्वेक्षण शिक्षा के प्रति रूचि जागृत करने का प्रशिक्षण मिला।

12) प्राथमिक शिक्षकों के पास गैर शिक्षकीय कार्यों की अधिकता है जिसके कारण प्राप्त विधियों को कक्षा को लागू करने में समय तथा मेहनत दोनो लगते हैं। बच्चों की संख्या अधिक है, बौद्धिक स्तर कम है, पालकों का सहयोग नहीं मिलता है घर में भी पढ़ाई के प्रति उपर्युक्त वातावरण नहीं है जिसके कारण बच्चे न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति भी नहीं कर पाते हैं।

13) कई शालाओं में सहायक शिक्षण सामग्री का अभाव है।

14) प्राथमिक कक्षा में बच्चे अधिक मात्रा में होने के कारण प्रशिक्षण पर आधारित प्रभावी अध्यापन करने में समस्या उत्पन्न होती है।

5.8 उपरोक्त प्रशिक्षण के प्रति प्राथमिक शिक्षकों के विचार/मत :–

1) प्राथमिक शिक्षकों को स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में अधिक सीखने को मिलता है। इससे बच्चों की समस्या हल करने में मदद मिलती है, बच्चे अधिक रूची से सीखते हैं।

2) स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम से अध्ययन–अध्यापन की आंतरक्रिया प्रभावी ढंग से चलती है।

3) यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिगम क्रिया को प्रभावी, उत्साही एवं रूचीपूर्ण बनाता है।

4) प्राथमिक शिक्षकों के अनुसार प्राप्त विधियों को कक्षा में उपयोग करने में समस्यायें आती हैं। क्योंकि कक्षा में बच्चे संख्या में अधिक होते हैं।

5.9 समस्यायें –

1) बच्चों के बौद्धिक स्तर बहुत कम है।

2) ग्राम शिक्षा समिति का सहयोग नहीं मिलता है।

3) कक्षा में बच्चों की संख्या अधिक होने से प्राप्त विधियों का उपयोग करने में कठिनाई होती है।

4) सहायक शिक्षण सामग्री का अभाव है।

5.10 समस्याओं का निदान –

1) कुल विद्यालयों में बच्चों की कम उपस्थिति होने की समस्या को शिक्षक द्वारा पालकों से मिलकर हल किया गया।

2) विद्यालयों में शिक्षकों की कम संख्या की समस्या का हल शिक्षकों में आपसी सहयोग या कक्षा में बुद्धिमान बच्चों की मदद से कक्षा शिक्षण की समस्या का निदान किया।

3) विद्यालय में सुविधाओं की कमी की समस्या को शिक्षक समाज संपर्क बैठकों में सभी के सहयोग से इसका निदान किया गया।

5.11 सुझाव –

1) स्मार्ट पी.टी. प्रशिक्षण हेतु सभी प्राथमिक शिक्षकों को अवसर मिलना चाहिए साथ ही बारी–बारी से सभी के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

2) प्राथमिक शिक्षकों को इस बात का भी प्रशिक्षण मिलना चाहिए कि जब बच्चे कक्षा में अधिक हो तब कक्षा शिक्षण कैसे करें जिससे सभी बच्चों की कक्षा में सहभागिता हो तथा कक्षा शिक्षण रोचक हो।

3) सभी शिक्षकों को शिक्षक प्रशिक्षण के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि कई शिक्षक इसे आवश्यक नहीं समझते।

4) अलाभान्वित वर्ग के बच्चों के सार्वभौमिक नामांकन एवं शिक्षण हेतु और अधिक प्रयास किए जाना चाहिए ताकि शिक्षक अपने प्रशिक्षण अनुभव से ऐसे बच्चों पर ज्यादा ध्यान दे सके।

5) क्षमताधिष्ठित (दक्षता आधारित) शिक्षण विधि का प्रशिक्षण भी और अधिक मिलना चाहिए। प्रशिक्षण में क्षमताओं के विकास पर अधिक बल देना चाहिए।

6) शिक्षकों पर गैर शिक्षकीय कार्यों का बोझ कम किया जाए जिससे वे शिक्षण कार्य भलीभांति कर सकें।

7) प्रशिक्षण को और अधिक व्यवहारिक बनाये जाने का प्रयास किया जाना चाहिए। ताकि शिक्षक प्रशिक्षण से प्राप्त विधियों को कक्षा में लागू कर सकें।

8) पर्यवेक्षण अधिकारी द्वारा स्कूलों का अवलोकन अनिवार्य व नियमित रूप से किया जाना चाहिए।

5.12 भविष्य के लिए शोध सुझाव :–

1) प्रस्तुत अध्ययन वर्धा जिले के 4 तहसीलों में स्मार्ट पी.टी. शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों पर आधारित है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संपूर्ण महाराष्ट्र में चलाया गया है,

भविष्य में इसी तरह का अध्ययन महाराष्ट्र के अन्य जिलों के प्राथमिक शिक्षकों के लिए भी किया जा सकता है।

2) (एन.सी.ई.आर.टी.) और (एस.सी.ई.आर.टी.) स्तर पर हो रहे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी अध्ययन किया जा सकता है।

3) प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों का निरंतर प्रशिक्षण हो रहा है। अतः इस प्रशिक्षण द्वारा बालक–बालिकाओं पर होने वाले प्रभाव एवं उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।

4) सेवापूर्ण एवं सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।